DSSSB TGT & PGT
Part-B
SCHOLAR BATCH
संस्कृत
छंद
Part -2
LIVE
17-06-2024 05:00 PM

वर्णिक छन्दः

(2) अनुष्टुप् छन्द

- लक्षण :-

श्लोके षष्ठ गुरु ज्ञेयं, सर्वत्र लघु पंचमम् ।
द्विचतुष्पादयोः ह्रस्वं, सप्तमं दीर्घ मन्ययोः ॥

लक्षण का अर्थ - जिस छन्द के प्रत्येक चरण में 8-8 वर्ण होते हैं चारों चरणों में पाँचवा वर्ण लघु और छठा वर्ण गुरु होता है। पहले और तीसरे में सातवां वर्ण गुरु तथा दूसरे और चौ चरण में सातवां वर्ण लघु होता है। वहाँ अनुष्टुप् छन्द होता है।

अनुष्टुप छन्द के प्रत्येक चरण में 8 अक्षर होते हैं। इस प्रकार चारों चरणों 32 अक्षर होते हैं।

उदहारण

1. गुरुर्ब्रह्म गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः ।
गुरुः साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः ॥

2. शैले- शैले न माणिक्यं मौक्तिकं न गजे-गजे ।
साधवो नहि सर्वत्र चन्दनं न वने वने ॥

3. वागर्थाविव सम्पृक्तौ वागर्थप्रतिपत्तये ।
जगतः पितरौ वन्दे पार्वती परमेश्वरौ ॥

इन्द्रवज्रा छन्द

11 x 4 = 4

- **लक्षण -** स्यादिन्द्रवज्रा यदि तौ जगौ गः

जिस छन्द के प्रत्येक चरण में क्रमशः तगण, तगण, जगण एवं अन्त में दो गुरु वर्ण आते हैं। इस प्रकार प्रत्येक चरण में 11-11 वर्ण होते हैं, वहाँ इन्द्रवज्रा छन्द होता है ।

उदहारण-

तगज	तगज	जगज = गु.गु.
S S I	S S I	I S I S S

. अर्थो हि कन्या परकीय एव तामद्य संप्रेष्य परिग्रहीतुः
जातो ममायं विशदः प्रकामं प्रत्यर्पितन्यास इवान्तरात्मा ।

श्रीनाथ नारायण वासुदेवं श्रीकृष्ण भक्तप्रिय चक्रपाणे ।
श्रीपद्मनाभाच्युत कैटभारे, श्रीराम पद्माक्ष हरे मुरारे ॥

उपेन्द्रवज्रा छन्द

लक्षण:- उपेन्द्रवज्रा जतजास्ततो गौ ।

जिस छन्द के प्रत्येक चरण में क्रमशः जगण, तगण, जगण तथा अन्त में दो गुरु वर्ण होते हैं, उसे उपेन्द्रवज्रा छन्द कहते हैं ।

उपेन्द्रवज्रा छन्द के प्रत्येक चरण में 11-11 वर्ण होते हैं इस प्रकार चारों चरणों में 44 वर्ण होते हैं।

उदाहरण-

IS I IIS I S I S S

1. त्वमेव माता च पिता त्वमेव, त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव
   त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव त्वमेव सर्व मम देव देवः ॥

2. परोपकाराय फलन्ति वृक्षा, परोपकाराय वहन्ति नद्यः ।
   परोपकाराय दुहन्ति गावः, परोपकार्थमिंद शरीरम् ॥

3. सुखस्य दुखस्य नकोऽपि दाता, परो ददातीति कुबुद्धिरेषा ।
अहं करोमीति भृषाभिमानः, स्वकर्म सूत्र ग्रथितो हि लोकः ॥

उपजाति छन्द

लक्षण-

स्यादिन्द्रवज्रा यदि तौ जगौ गः, उपेन्द्रवज्रा जतजास्ततो गौ अनन्तरोदिरित लक्ष्मभाजौ, पादौ यदीयावुपजातयस्ताः

जिस छन्द में इन्द्रवज्रा और उपेन्द्रवज्रा के लक्षण मिले होते हैं, उसे उपजाति कहते हैं ।

उपजाति छन्द के प्रत्येक चरण में 11 वर्ण, इस प्रकार चारों चरणों में 44 वर्ण होते हैं ।

उदाहरण

1. येषां न विद्या न तपो न दानं ज्ञानं न शीलं न गुणो न धर्मः ।
ते मर्त्यलोके भुविभारभूताः, मनुष्य रूपेण मृगाश्चरन्ति ।

2. श्रोतं श्रुतेनैव न कुण्डलेन, दानेन पाणिर्नतु कङ्कणेन ।
विभाति कायः करुणा पराणाम् परोपकारेण च चन्दनेन ।।

3. भोगा न भुक्ता वयमेव भुक्ता, तपो न तप्तं वयमेव तप्ताः ।
कालो न यातो वयमेव याताः, तृष्णा न जीर्णा वयमेव जीर्णाः ॥

वंशस्थ छन्द

12×4=48

लक्षण - जतौ तु वंशस्थ मुदीरितं जरौ

वंशस्थ छन्द के प्रत्येक चरण में 12 वर्ण होते हैं। इसके प्रत्येक चरण में जगण, तगण, जगण, रगण होते हैं ।

जतौ जरौ

उदाहरण-

जगण तगण जगण रगण

ISI SSI ISI SIS

DSSSB TGT & PGT संस्कृत SCHOLAR BATCH

1. भवन्ति नम्रास्तरवः फलोद्गमः, नवाम्बुविर्दूरविलम्बिनो. घनाः
अनुद्धताः सत[redacted]पुरुषाः समृद्धिभिः, स्वभाव एवैष परोपकारिणाम्

3. इदं किलाब्याज मनोहरं वपुः, तपः क्षमं साधयितुं य इच्छति ।
ध्रुवं स नीलोत्पलपत्र धारया, शमीलतां छेन्तुमृषि र्व्यवस्याति ।

DSSSB TGT & PGT संस्कृत SCHOLAR BATCH

वसन्ततिलका

लक्षण - उक्ता वसन्ततिलका तभजाजगौगः

तगण भगण जगण जगण गुरु

14 = 56

जिस छन्द के प्रत्येक चरण में क्रमशः तगण, भगण, जगण, जगण तथा अन्त में दो गुरु वर्ण हों तो उसे वसन्ततिलका छन्द कहते हैं। इसके प्रत्येक चरण में 14 वर्ण, इस प्रकार चारों चरणों में 56 वर्ण होते हैं।

उदाहरण-

त. भ. ज. ज. गु. गु.

S S I S I I I S I I S I S S = 14 वर्ण

S S I S I I I S I I S I S S

1. पद्माकरः दिनकरो विकची करोति, → तगण भगण जगण जगण गुरु गुरु

SSI SII ISI ISI SS

S S I S I I I S I I S I S S

चन्द्रो विकासयति कैरवचक्रवालम् ।

S S I S I I I S I I S I S S

नाभ्यर्थितो जलधरोऽपि जलं ददाति

सन्तः स्वयं परहिते विहिताभियोगाः ।

S S I S I I I S I I S S S S

(2) जाड्यं धियो हरति सिञ्चति वाचि सत्यं,
मानोन्नति दिशति पापमपाकरोति
चेतः प्रसादयति दिक्षु तनोति कीर्तिं,
सत्संगति कथय किं न करोति पुंसाम्

मालिनी छन्द

15x4=60

लक्षण – न न म य य युतेयं मालिनी भोगि लोकैः

जिस छन्द के प्रत्येक चरण में क्रमशः नगण, नगण, मगण, यगण, यगण होते हैं तथा 8 और 7 वर्णों के बाद यति होती है, उसे मालिनी छन्द कहते हैं। मालिनी छन्द के प्रत्येक चरण में 15 वर्ण होते हैं इस प्रकार चारों चरणों में 60 वर्ण होते हैं ।

उदा. न. न. म. य. य.

III III S S S IS S IS S

ऽ ऽ ऽ। ऽ ऽ। ऽ ऽ

सरसिजमनु विद्धं, शैवलेनापि रम्यं ।

। । । । । । ऽ ऽ ऽ। ऽ ऽ। ऽ ऽ

म लिनमपि हिमांशी, लक्ष्म, लक्ष्मीं तनोति

। । । । । । ऽ ऽ ऽ। ऽ ऽ। ऽ ऽ

इयमधिक मनोज्ञा, वल्कलेनापि तन्वी ।

। । । । । । ऽ ऽ ऽ। ऽ ऽ। ऽ ऽ

किमिव हि मधुराणां, मण्डनं नाकृतीनाम् ।

शार्दूल विक्रीडित छन्द

लक्षण: सूर्याश्वैः मसजस्ततः सगुरव शार्दूलविक्रीडितं ।

जिस छन्द के प्रत्येक चरण में क्रमशः मगण, सगण, जगण, सगण, तगण, तगण तथा अन्त में एक गुरु वर्ण होता है तथा 12 और 7 वर्णों के बाद यति होती है, उसे शार्दूल विक्रीडित छन्द कहते हैं ।

शार्दूलविक्रीडित छन्द के प्रत्येक चरण में 19 वर्ण होते हैं ।

DSSSB TGT & PGT संस्कृत SCHOLAR BATCH

उदाहरण-

केयूरा न विभूषयन्ति पुरुषं, हारा न चन्द्रोज्ज्वलाः

न स्नानं न विलेपनं न कुसुमं, नालंकृता मूर्धजाः ।

वाण्येका समलंकरोति पुरुषं या संस्कृता धार्यते

क्षीयन्तेऽखिल भूषणानि सततं, वाग्भूषणम् भूषणम् ॥

SSS IIS
मगण सगण
जगण सगण
ISI IIS
तगण तगण
SSI SSI
गुरु
S

DSSSB TGT & PGT संस्कृत SCHOLAR BATCH

स्त्रग्धरा छन्द

लक्षण: म्रभ्नैर्यानां त्रयेण त्रिमुनि यति युता स्रग्धरा कीर्तितेयम् ।

जिस छन्द के प्रत्येक चरण में क्रमशः मगण, रगण, भगण, नगण और 3 यगण होते हैं तथा 7; 7 और 7 वर्णों के बाद यति होती है, उसे स्रग्धरा छन्द कहते हैं । स्रग्धरा छन्द के प्रत्येक चरण में 21 वर्ण होते हैं । इस प्रकार चारों चरणों में 84 वर्ण होते हैं।

उदा. म. र. भ. र. य. य. य

S S S S I S S I I I I I I S S I S S I S

ग्रीवाभंगाभिरामं मुहुरनुपतति स्यन्दने बद्धदृष्टिः,

पश्चार्धेन प्रविष्टः, शरपतनभयाद्, भूयसा पूर्व कायम्

दर्भैरर्द्धावलीढैः श्रमविवृतमुख भ्रंशिभिः कीर्ण वर्त्मा,

पश्योपग्रप्लुतत्वाद् वियति बहुतरं, स्तोकमुर्व्यां प्रयाति ।

शुकनासोपदेश

मगण
रगण
भगण
रगण
यगण
यगण
यगण